मन का शोर

--- कोमल तिवारी

दिल थोड़ा परेशान है,
ना जाने अब कौन-सा आया तूफ़ान है।

मन का चलता शोर है,
जो खूब दिखाता ज़ोर है।

आँखों में हो रही सूजन,
और हाथ बने कमज़ोर हैं।
मन की आशा है,
ना जागने की अभिलाषा है।

हर किसी का फ़साना है,
डूबते को और डुबाना है।
ना जाने क्या हो रहा है,
ये जग कहाँ सो रहा है।

बस कफन डालने की बारी है,
मुर्दों को समझाने में कौन-सी समझदारी है।

क्योंकि जिसका कुछ नहीं,
वो क्या खोएगा?
बंजारा भी भला क्यों रोएगा?

ये कहते हैं–आईना सच दिखाता है,
टूटने के बाद तो वो भी बिखर जाता है।

होती है दिल की डोर नाज़ुक,
जब कहाँ कोई जा पाता है।
बस एक-दूसरे की ओर उंगली कर,
ये ख़ुद को बचाता है।

जो चाँद-सी सूरत थी,
वो भी आज पत्थर की मूरत है।

जो हो रहा जर्जर है,
वो दिखाता सबको दर्पण है।

ये भी केवल मन का बिखेरा है,
जिसे शब्दों ने घेरा है।
नहीं जानता क्या सही है,
बस खिला रहा मन को पीड़ा है।

थी डोर बड़ी नाज़ुक दिल की
इसे अब मेरे अपनो ने छेड़ा है!

अब जाने की तैयारी है,
मेरी अलविदा कहने की बारी है।